फ्रेंच बॅरोक कला

फ्रांस में बॅरोक कला का प्रसार कुछ देर से व कुछ परिवर्तित रूप में हुआ और उसमें शास्त्रीय कला के तत्त्वों पर अधिक बल दिया गया। चित्रकार ल वालान्तँ, कारावाद्ज्यो के सबसे पहले फ्रेंच अनुयायी थे किन्तु उन्होंने अपना सम्पूर्ण कार्यकाल रोम में बिताया व उनकी कला का फ्रेंच कला पर शायद ही कुछ प्रभाव पड़ा होगा। फ्रेंच कला को बॅरोक शैली की ओर मोड़ देने का कार्य मुख्यतया कुछ द्वितीय श्रेणी के फ्रेंच चित्रकारों ने किया जिनमें **क्लोद विन्यो** नाम के एक चित्रकार थे। विन्यो 1616-24 तक रोम में रहे जहाँ वे कारवाद्ज्यो के यथार्थवाद से परिचित हुए किन्तु उनकी कला पर सबसे अधिक प्रभाव आडाम एल्शायमेर व उनके डच शिष्य पीटर लास्टमन का हुआ। **सिमों वुए** की कला ने फ्रेंच कला के विकास को सुनिश्चित रूप से मार्गदर्शन किया। समीपवर्ती एशियाई देश व इटली की यात्रा करके वे 1627 में वापस फ्रांस आ गये। अन्त तक उन्होंने पेरिस में रहकर चित्रकारी की व वहाँ के प्रमुख चित्रकारों में उनकी गणना हुई। पेरिस के गिरजाघरों व मठों के लिए वुए ने कई वेदिका चित्र बनाये जो बॅरोक शैली से मिलते-जुलते हैं। उन पर मुख्यतया रोमन चित्रकार लाफ्रान्को व ग्वेर्चिनो का प्रभाव है यद्यपि उन्होंने वीनस के चित्रकारों का अनुसरण करके चमकीले रंगों का प्रयोग किया है।

बॅरोक शैली से प्रभावित अन्य फ्रेंच चित्रकारों में से **जार्ज द ला तुर** विशेष प्रसिद्ध हैं व उनकी कृतियाँ धार्मिकता व कृत्रिम प्रकाश के प्रभाव के विचार से विशेष अभ्यसनीय हैं। वे शायद कभी रोम की यात्रा करके कारावाद्ज्यो के शिष्य ल वालान्तँ या बार्तोलोमियो मान्फ्रेदी के सम्पर्क में आ गये होंगे। किन्तु उनके 1630 के करीब बनाये चित्र कारावाद्ज्यो के डच अनुयायी हान्थार्स्ट व टब्रूर्गन की चित्र शैली से अधिक मिलते-जुलते हैं। मोमबत्ती के प्रकाश से युक्त उनके धार्मिक चित्र 'बढ़ई संत जोसेफ', 'संत सेबास्टियन' व 'जन्मोत्सव' कारावाद्ज्यो के समान यथार्थतापूर्ण होते हुए उनमें मौलिक विचारशीलता व वातावरणीय गाम्भीर्य है। पृष्ठभूमि में बारीकियों का अभाव है व विस्तृत क्षेत्रों की योजना से सरलीकरण करके दृश्यों को धार्मिकता से ओत-प्रोत बनाया है जो प्रभाव समाकलीन डच या इटली के चित्रकारों की कला से भी स्पेन के चित्रकार थुर्बारान की कला में अधिक पाया जाता है। (चित्र 9)

चित्रकार लुई ल नें व उनके भाई आंत्वान व मात्यु की कला पर भी समकालीन डच व इटली की कला का असर है। तीनों का जन्म लीओं में हुआ व 1630 के करीब तीनों पेरिस में चित्रकारी करते थे। उनमें से लुई ल नें सम्भवत: रोम की यात्रा कर चुके थे व वहाँ उन्होंने चित्रकार काम्बोच्चिओ के किसानों व समाज के सामान्य स्तर के लोगों के दैनंदिन जीवन के चित्र देखे होंगे। 1640 के करीब किसानों के जीवन के चित्रों के लिए लुई ल नें ख्यातनाम हुए। उनके चित्रों में फटे-पुराने कपड़े पहने हुए किसान परिवारों का बहुत-ही सहानुभूतिपूर्ण चित्रण है। प्रकाश व वातावरण का यथार्थ प्रभाव अंकित करने में वे विशेष निपुण थे। स्थायी भाव पर विशेष बल देने से उनके संयोजन शान्तिपूर्ण परन्तु कुछ गतिहीन से प्रतीत होते हैं। आकृतियाँ यथार्थवादी होते हुए उनमें कुछ शास्त्रीयता की

Scanned with CamScan

झलक है। उनका प्रसिद्ध चित्र 'लोहार की दुकान' पौराणिक विषय के 'रोमन अग्नि देवता' के चित्रों का स्मरण दिलाता है यद्यपि इस चित्र का प्रसंग समकालीन किसान जीवन से चुना गया है। इस चित्र की तुलना वेलास्केस के प्रसिद्ध चित्र 'अग्नि देवता की भट्टी' से करना बोधप्रद होगा। वेलास्केस के स्वाभाविक व गतिपूर्ण अंकन में कथनात्मक सामर्थ्य है जिसका ल नें के चित्र में अभाव है, किन्तु ल नें के चित्रान्तर्गत प्रकाश का प्रभाव व विस्तृत प्रकाश क्षेत्र की कुशल योजना से आकृतियों को सुगठित करने का संयोजन कौशल विशेष सराहनीय है। (चित्र 62)

एक अन्य फ्रेंच बॅरोक चित्रकार थे **फिलिप द शाम्पेन्य** जिनका जन्म ब्रसल्स में हुआ था व जिनकी कला पर रुबेन्स का काफी प्रभाव था जिसका 'मजूसियों की आराधना' स्पष्ट उदाहरण है। उनके आरम्भकालीन 'कार्डिनल रिशल्यू' जैसे व्यक्ति चित्र वॅन डाइक के व्यक्ति चित्रों से मिलते-जुलते हैं। डच कला से प्रभावित होते हुए शाम्पेन्य के व्यक्ति चित्र स्पष्टता, भाव गम्भीरता व चिकना तूलिका-संचालन आदि गुणों से विशेषतापूर्ण हैं। श्रेष्ठ चित्रकार होने पर भी समकालीन फ्रेंच चित्रकार पुसँ के सामने वे अपनी योग्यता के अनुरूप ख्याति प्राप्त नहीं कर पाये।

बॅरोक शैली द्वारा शास्त्रीयतापूर्ण चित्रण करके **पुसँ** ने (1594-1665) न केवल फ्रांस में बल्कि समूचे यूरोप में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। नार्मंदी के अपने गाँव को छोड़कर पुसँ, अध्ययन के लिए प्रथम रूआँ व उसके पश्चात् पेरिस गये जहाँ वे 1612 से 1624 तक रहे। इस कालावधि के अन्त में उन्होंने चित्रकार द्युशेन के साथ ल्युक्सेम्बुर महल के अलंकरण का कार्य किया। 1624 में रोम जाने के बाद वे दोमेनिकिनो की कला से बहुत प्रभावित हुए। उनके चित्र 'डेविड की विजय' की पृष्ठभूमि की आकृतियों का संयोजन दोमेनिकिनो के चित्र 'संत अँड्रयू का शिरच्छेदन' के आकृति संयोजन से मिलता-जुलता है। पुसँ ने अपने रोम के निवास काल में अन्य श्रेष्ठ चित्रकारों की कला के अध्ययन से काफी लाभ उठाया। रेफील के संयोजन कौशल व वेरोनीस की सुसंगतिपूर्ण रंग योजना ने उनका काफी मार्गदर्शन किया। उनके वेदिका चित्र 'संत एरास्मस का आत्म बलिदान' व 'संत जेम्स को कुमारी मेरी का दर्शन' में आगामी महान बॅरोक शैली के पूर्व चिह्न दृष्टिगोचर हैं। इन चित्रों के स्पष्ट घनत्वांकन और पृष्ठभूमि की आकृति योजना प्रमाणित करते हैं कि पुसँ ग्वेर्चिनो की कला से प्रभावित थे। किन्तु पुसँ की कला को स्थायी मार्गदर्शन प्राचीन मूर्तिकला से हुआ। (चित्र 63)

1630 में पुसँ का विवाह हुआ व उसके पश्चात् 2/3 साल तक उन्होंने गिरजाघरों या राजमहलों के लिए चित्रण नहीं किया। इस काल की उनकी कृतियाँ आकार में छोटी हैं क्योंकि अब उन्होंने मध्यमवर्गीय सुशिक्षित कला प्रेमियों के लिए चित्रण शुरू किया था। 'कवि की अंत:प्रेरणा' जैसे आगामी कुछ वर्षों के चित्र काव्यमय भावनाओं से भरे हुए हैं और कुछ रसिकों के विचार से ये चित्र पुसँ की सबसे श्रेष्ठ कलाकृतियाँ हैं। 1633 के पश्चात् उन्होंने फिर से धार्मिक विषयों के चित्र बनाना आरम्भ किया जिनमें पूर्वविधान के बहुत से चित्र हैं। तिशेन की कला के अध्ययन ने उनको स्वच्छ व दीप्तिमान रंगों के प्रयोग व रंगीले वातावरण के निर्माण के लिए प्रेरित किया था व अब उसका प्रभाव अधिक स्पष्ट

Scanned with CamScan